Krishnagar Academy
Subject - Hindi 2nd Lang.
class - IX

साहित्य सागर - गद्य - भाग

नेताजी का चश्मा

प्रश्न 1) जैसा कि कल जा चुका है, मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची। जिसे कहते हैं बस्ट और सुन्दर थी।

यहाँ 'बस्ट' का क्या अर्थ है? यह बस्ट किस महान नेता की थी?

उत्तर :- 'बस्ट' का अर्थ है शरीर के कमर से ऊपरी भाग की मूर्ति। यह सुंदर मूर्ति नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की थी जो एक क्रांतिकारी नेता थे और हमारे भारत को स्वतंत्र कराने में उनकी अहम भूमिका थी। उन्होंने आजाद हिन्द फौज का संगठन करके म्यानमार और भारत की सीमा पर मौजूद ब्रिटिश साम्राज्य की सेना पर आक्रमण किया था।

प्रश्न: 2) नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की मूर्ति का वर्णन अपने शब्दो में कीजिए?

उत्तर : नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की मूर्ति कस्बे के चौराहे पर लगाई गई थी. जिसको बनाने वाले मास्टर मोतिलाल जी थे जो कस्बे के हाइस्कूल के ड्राइंग मास्टर भी थे। उन्होंने नेताजी की संगमरमर की मूर्ति बनाई जो टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची थी। नेताजी फौजी वर्दी में दिखाए गए थे। उस मूर्ति को देखकर नेताजी द्वारा दिए गए नारो, 'दिल्ली चलो' और तुम मुझे खून दो. मैं तुम्हे आजादी दूंगा' का स्मरण हो आता। मूर्तिकार का यह प्रयास सफल और सराहनीय था। उसमें केवल एक ही कमी थी नेताजी की पहचान, उनका चश्मा मूर्ति पर नही बना हुआ था। यानि चश्मा तो था, पर संगमरमर का नही था।

प्रश्न:3) किस दृष्टि से व सोच से मूर्ति लगाने का यह प्रयास सफल और सराहनीय था? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए

उत्तर: यह विचार इसलिए सराहनीय था कि हमारे देश के एक बड़े नेता की मूर्ति चौराहे पर दिखाई देगी तो सबको उनका तथा अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान याद रहेंगे। हमें उसे लोगो के प्रति सदैव कृतज्ञ होना चाहिए जिनके बलिदान के फलस्वरूप हम स्वतंत्र भारत में जी रहे हैं। सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज का निर्माण किया गया था तथा देश को आजाद कराने के लिए उन्होंने अँग्रेजी शासको से टक्कर ली थी, उनके द्वारा दिया गया नारा 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हे आजादी दूँगा' जनवासी में प्रसिद्ध हो गया था। इसलिए उसे महान व्यक्ति की मूर्ति को कस्बे के चौराहे पर लगाना वास्तव में एक प्रेरणादायक प्रयास था।

प्रश्न:4) हलदार साहब के मन में मूर्ति को देखकर क्या विचार उत्पन्न हुए? समझाकर लिखो।

उत्तर: हलदार साहब हर पन्द्रहवें दिन कंपनी के काम से कस्बे से गुजरकर जाते थे। उनके मन में यह विचार उत्पन्न होते थे कि वह मूर्ति जिसने भी बनवाई उसका आइडिया तो सही है। कस्बे के नागरिकों का प्रयास भी सराहनीय है। महत्व इस बात का नहीं कि मूर्ति कैसी बनी, बल्कि उस भावना का है जो देशभक्ति से भरी हुई थी क्योंकि आजकल सच्ची देशभक्ति बहुत ही कम देखने को मिलती है। लेकिन संगमरमर का चश्मा क्यों नहीं बनाया गया और अब इस पर यह सचमुच का चश्मा कौन लगाता है और

बदलना है। संगमरमर की मूर्ति पर चश्मे की कमी इसे के लिए सचमुच का चश्मा लगाने का आइडिया भी उन्हे पसन्द आया।

संकेत- "पानवाले के लिए यह एक मजेदार बात थी, लेकिन हालदार साहब के लिए चकित और द्रवित करने वाली। यानी वह ठीक ही सोच रहे थे।"

प्रश्न 1) पानवाला कौन था? उसके चरित्र की दो विशेषताओं का वर्णन कीजिए?

उत्तर: पानवाला कस्बे के छोटे से बाजार का, एक दुकानदार था। पानवाला खुद भी पान खाने का शौकीन था। वह भला, मोटा और खुशदिल आदमी था। उसे अपने कस्बे की सभी प्रकार की बातों की जानकारी रहती थी और वह बहुत बोलता (बातूनी) था इस कारण उसकी बातों को लोग आनन्द के साथ सुनते भी थे।

प्रश्न 2) 'यानि वह ठीक ही सोच रहे थे।'— वाक्यांश के अनुसार हालदार साहब क्या सोच रहे थे?

उत्तर: हालदार साहब जब भी नेताजी की मूर्ति को देखने को सोचने कि यह मूर्ति शायद किसी कुशल कारीगर द्वारा नहीं बनाई गई है। इसलिए उनके मन में तरह-तरह के प्रश्न उठते थे कि शायद यह छोटा-सा कस्बा है, यहाँ के अधिकारियों को अच्छे मूर्तिकारों के विषय में जानकारी नहीं होगी या फिर शायद उतना बजट ही नहीं होगा या फिर काग़जी कार्य पूरा होने में (सरकार की तरफ से) समय लग गया होगा इसलिए देर होने के कारण तथा बोर्ड की शासनावधि समाप्ति के समीप होने के कारण किसी स्थानीय कलाकार से बनवा ली होगी, यही सब बातें हालदार साहब के मस्तिष्क में आ रही थीं और वे ठीक ही सोच रहे थे। मूर्ति के नीचे 'मूर्तिकार मास्टर मोतीलाल' लिखा था जो कि वाकई कस्बे का एक ड्राइंग का अध्यापक था।

प्रश्न: 3) सेनानी न होने पर भी चश्मेवाले को 'कैप्टन' क्यों कहा जाता था? अपने विचार लिखिए।

उत्तर: सेनानी न होने हुए भी चश्मेवाले को 'कैप्टन' इसलिए कहा जाता था क्योंकि वह एक सच्चे सेनानी की भाँति देशभक्त था। सुभाषचन्द्र जी की मूर्ति पर चश्मा न होने पर वह उनके प्रति अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए अपने चश्मों में से जिन्हे वह ठीक करता था, एक चश्मा पहना देता था क्योंकि उसे चश्मे के बिना नेताजी की मूर्ति अधूरी-सी प्रतीत होती थी। इसलिए कस्बे के निवासी उसे 'कैप्टन' कहते थे। वह एक फौजी कैप्टन की तरह अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहता था अतः उसका यह नाम उचित था

H.W प्रश्न 1. 'क्या होगा उस कौम का ..... मौके ढूँढ़ती है।" उपरोक्त कथन से लेखक का क्या आशय है? समझाओ।

प्रश्न 2. चौराहे की अधिकांश दुकाने क्यों बंद थी? कहानी में कैप्टन की क्या भूमिका है?

प्रश्न 3. कहानी के शीर्षक (Title) की सार्थकता सिद्ध कीजिए